Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

नरसिंहपुर जिले के प्राकृतिक पर्यटन स्थल का अध्ययन

योगेन्द्र कुमार ठगेले*

* सहायक प्राध्यापक (इतिहास) शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाडरवारा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – हमारे देश में पर्यटन जहाँ एक ओर स्थानीय स्तर सामाजिक और आर्थिक लाभ का स्त्रोत है और विभिन्न क्षेत्रो में प्रादेशिक, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मेल-मिलाप को बढ़ावा देता है, वहीं दूसरी ओर इससे संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में शानदार कैरियर के अवसर भी उपलब्ध है। वर्तमान समय में पर्यटन अत्यंत तीव्र गति से बढ़ता हुआ उद्यम व व्यवसाय बन गया है, साथ ही यह मानवीय स्तर पर मनुष्यों के मनोरंजन, आकर्षण व आपसी सौहार्दपूर्ण वातावरण को निर्मित करने का एक सहज माध्यम है। सतत पर्यटन की अवधारणा भी इसमें नये आयाम के रूप में पर्यटन क्षेत्र को विस्तार दे रही है। नरसिंहपुर जिले की प्राकृतिक विविधता यहाँ स्थित विंध्यांचल एवं सतपुड़ा की पर्वत श्रेणियाँ, नर्मदा नदी का घाटी क्षेत्र, मैदानी भाग, जलप्रपात, शैलाश्रय गुफायें इत्यादि के आसपास स्थित विभिन्न पर्यटन स्थल राज्य के पर्यटन में अपना विशेष स्थान रखते है। प्राकृतिक स्थलों का सौंदर्य, नदियों का कलकल प्रवाह, हरियाली, उच्चावच क्षेत्र, धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण आदि पर्यटकों को आकर्षित करने वाले प्रमुख प्राकृतिक क्षेत्र हैं।

शब्द कुंजी – पर्यटन, सामाजिक, आर्थिक, स्थानीय, सतत और प्राकृतिक विविधता।

प्रस्तावना – आज पर्यटन उद्योग के सम्मुख विकास के लिय अनेक चुनौतियाँ विद्यमान है आवश्यकता इस बात की है, कि पर्यटन के लिये उचित वातावरण तैयार किया जाये और प्रदेश तथा देश के सैलानियों को स्वर्ग के रूप में एक आकर्षक छवि प्रस्तुत करने की पर्यटन क्षेत्र में प्रादेशिक विविधताओं के अनुरूप सतत शोध अनवेषण को बढावा देते हुए जनसामान्य की सहभागिता के साथ पर्यटन विकास क्रम हेतु पोस्टर, बैनर, मॉडल, मॉड्यूल्स, मानचित्र आरेख, पर्यटन से संबंधित स्लोगन व नारे, कार्यशालायें एवं विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कर जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया जाये। पर्यटन विभाग द्वारा प्रायोजित विदेशी पर्यटक सर्वेक्षण एवं प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर पर्यटन विकास के लिये संवर्द्धनात्मक उपायों में दो बातो पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

प्रथम उन क्षेत्रो की ओर प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है, जो अभी तक शासन प्रशासन की अनदेखी के कारण उपेक्षित रहे है और जहाँ अधोसरंचना विकास कर पर्यटकों को आकर्षित करने की नयी संभावनायें तलाषी जा सकती है।

दूसरे परम्परागत पर्यटकों को प्रोत्साहन के साथ-साथ उन पर्यटको को आकर्षित करने का प्रयास किया जाये जो साहसिक भ्रमण जैसे- पर्वतारोहण, ट्रैकिंग, जिप लाइनिंग आदि कई कार्यक्रमों की अपेक्षा अभिरूचि के कुछ गिने चुने स्थानों पर आरामदायक भ्रमण की व्यवस्था अधिक उपयोगी होंगी। नरसिंहपुर जिला भी इसका अपवाद नही है। जिले में विद्यमान पर्यटन राज्य में विशेष महत्व रखता है।

नरसिंहपुर जिले के सुप्रसिद्ध दर्शनीय एवं आध्यात्मिक पर्यटन स्थल अपने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के लिये जाने जाते है। जिले में इतिहास से जुड़ी काफी संरचनायें परिलक्षित होती है। यहाँ पर उपलब्ध पर्यटन स्थलों पर वर्ष भर पर्यटकों का आवागमन बना रहता है। इतिहास, धर्म एवं कला संस्कृति में रूचि लेने वाले व्यक्तियों के लिये यह महती आवश्यकता वाला क्षेत्र है। माँ नर्मदा का पावन तट जिले के धार्मिक पर्यटन स्थलों में विशेष महत्व रखता है, जिसके अंतर्गत करेली का बरमान घाट, सांकल घाट, सोकलपुर, ककराघाट आदि स्थानीय स्तर पर प्रसिद्ध धार्मिक क्षेत्र है। इसके साथ ही जिले में नरसिंहपुर, गोटेगॉव, गाडरवारा, करेली, सांईखेड़ा में स्थित पर्यटन स्थलों का भी पर्यटकों द्वारा भ्रमण किया जाता है। यहाँ स्थित जलप्रपात, नदियाँ, वनभूमि, मंदिर और धार्मिक स्थान अपनी गरिमा और गौरव के लिये प्रसिद्ध है तथा पर्यटन आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

नरसिंहपुर जिले में प्रवाहित होने वाली मुख्य नदी नर्मदा है तथा इसके साथ ही शेर, शक्कर, सीतारेवा आदि सहायक नदियाँ भी प्राकृतिक रूप से इसे संवारने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इस जिले का महत्व प्रागैतिहासिक काल से ही रहा है। भटेरा नामक स्थल से प्राप्त अवशेष इसके आदिकाल से संबंध का प्रमाण प्रस्तुत करते है। बरहटा नामक स्थल से पाण्डवों द्वारा अज्ञातवास का समय व्यतीत करने की जानकारी मिलती है। बिल्थारी को प्राचीन बलि स्थली कहा जाता है, जहाँ राजा बलि ने वामन भगवान को अपना संपूर्ण राज्य दक्षिणा में देकर अपने शरीर का अर्पण कर दिया था। इस प्रकार यहाँ स्थित हिंदु धार्मिक स्थल इस भू-भाग के ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व का वर्णन करते है। नर्मदा घाटी परिक्षेत्र के अंतर्गत आने वाला यह जिला अत्यंत रमणीय, धार्मिक, शांत वातावरण व मन को प्रफुल्लित करने वाला है, जहाँ, प्रेम, सद्भाव, परस्पर सहयोग की प्रधानता रही है। मध्यप्रदेश का नरसिंहपुर जिला गन्ना उत्पादन में प्रदेश में अग्रणी स्थान रखता है। गन्ना बाहुल्य जिला होने के कारण क्षेत्र विशेष में कई शुगर मिल फैक्ट्री विद्यमान हैं साथ ही यहाँ पर उत्पादित की जाने वाली तुंअर दाल का देश के विभिन्न राज्यों में निर्यात किया जाता है। नरसिंहपुर मध्यप्रदेश के जबलपुर संभाग का एक भाग है, जिसका प्रशासनिक मुख्यालय नरसिंहपुर शहर में विद्यमान है।

विश्लेषण– नरसिंहपुर जिला माँ नर्मदा के पावन तट पर बसा प्राकृतिक

सुंदरता से संपन्न क्षेत्र है, जहाँ ऐतिहासिक, धार्मिक, आध्यात्मिक और प्राकृतिक रूप से समृद्ध स्थल विद्यमान है। पाषाण काल से लेकर पौराणिक, सातवाहन, गोंडवंश, भौंसले (मराठा शासन), स्वतंत्रता संग्राम व कांग्रेस आंदोलन से संबधित महत्वपूर्ण घटनाओं का प्रत्यक्ष रूप से साक्षी रहा है और क्षेत्र विशेष में इसकी ऐतिहासिक धरोहर के प्रति जनसामान्य की विशेष आस्था रही है। पर्यटन के दृष्टिकोण से इस भू-भाग में प्राकृतिक विभिन्नता लिये पर्वतीय श्रृंखलायें, नदी घाटी क्षेत्र, मैदानी भाग, जलप्रपात, नदियाँ, झील, जलाशय और जलधारायें है। जिले के ऊँचाई से गिरते जल प्रपातों का दृष्य अत्यंत ही मनोरम है। जिले में स्थित धरातलीय, पर्वतीय, नदी घाटी प्रदेश एवं मैदानी भाग पर्यटकों के लिये आकर्षण के प्राकृतिक भू-दृष्य हैं। यहाँ स्थित पर्यटन स्थलों की प्राकृतिक सुंदरता पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। नरसिंहपुर जिले में प्रवाहित होने वाली नदियों की कलकल करती जलधारायें अनायास ही पर्यटकों के मनमोह लेती हैं। यहाँ हरी-भरी हरियाली, जंगल क्षेत्र, पेड़-पौधों व वनस्पतियों का सुंदर नजारा देखने में काफी अच्छा लगता है। नरसिंहपुर जिले के प्राकृतिक स्वरूप से आकर्षित करने वाले स्थानों की जानकारी निम्नानुसार है:-

रानी दहार झील- रानी दहार (दहाड़) गाडरवारा से 27 कि.मी. दूर सतपुड़ा पर्वत की तलहटी में स्थित प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर रमणीक स्थल है, जहाँ प्राचीन मंदिर एवं झील प्रमुख आकर्षण केन्द्र है और पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते है। सतपुड़ा के मध्य भाग से पर्वत का सीना चीरते हुए ऊमर नदी आकर इस झील का निर्माण करती है। यहाँ नदी में स्थित कुंड को ही रानी दहार कहा जाता है, जहाँ रानी नदी में समा गई थी। विशाल जलराशि के किनारे स्थित शिव मंदिर तथा आश्रम प्राचीन ऋषियों के तपोवन की स्मृति साकार करता है, जिसे ब्रम्हलीन स्वामी आत्मानंद जी द्वारा अपनी एकांत साधना के लिये चुना था। रानी दहार के प्राकृतिक सौंदर्य के साथ ही यहाँ क्षेत्रीय इतिहास की कड़ी के रूप में पहाड़ी पर गोंड राजाओं के राजमहल के अवशेष है, जिनमें से ही एक गोंडरानी के संबंध में प्रचलित किवदंती के अनुसार नदी जल के उद्गम की खोज में नदी पर रस्सी बांधने व उसके टूटने से रानी के नदी में गिरने से यह स्थल रानीदहार के नाम से प्रचलित हो गया। यहाँ बारिश के समय आसपास की हरियाली, नदी का प्रवाह, शांत स्थल इसे पर्यटन के रूप में उत्तम स्थल बनाता है, जहाँ झील में जल की अधिकता होने से पर्यटकों द्वारा यहाँ स्नान करने का आनंद भी लिया जाता है। पहुँच मार्ग की दुर्गमता के कारण यहाँ पर्यटकों की संख्या सीमित रहती है, जहाँ पहुँचने के लिये लोगो को स्वयं के वाहन का सहारा लेना पड़ता है।

छोटा जबलपुर (गोटीटोरिया)- गाडरवारा से लगभग 23 कि.मी. दूर वनांचल ग्राम मोहपानी गोटीटोरिया के नजदीक स्थित छोटा जबलपुर अपनी ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक विशेषताओं के कारण क्षेत्र विशेष में एक प्रमुख पिकनिक स्पॉट के रूप में जाना जाता है। सतपुड़ा पर्वत की आकर्षक वादियों और सीतारेवा नदी तट पर स्थित यह स्थल ब्रिटिष काल में अपनी कोयला खानों के लिये प्रसिद्ध था, जिसका उपयोग स्थानीय स्तर पर विद्युत उत्पादन में किया जाता है। पर्यटक यहाँ अपने परिवारों के साथ पहुँचकर सुंदर चट्टानों, नदी, लहलहाते वृक्षों एवं झर-झर करते झरनों का आनंद उठाते है और प्रकृति की गोद में सुकून के पलों की अनुभूति करते है। यहाँ पर आने का समय नवम्बर से जनवरी माह के बीच सबसे उत्तम होता है। वन विभाग व स्थानीय ग्राम वन समिति के द्वारा इसे ईको पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किया जा रहा है जहाँ पर्यटक प्राकृतिक सौंदर्य के बीच साहसिक व मनोरंजक गतिविधियों का आनंद ले सकेंगे। जिला प्रशासन के द्वारा भी यहाँ पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये ईको टूरिज्म, जिप लाइन, डिजिटल शो, फारेस्ट ट्रैकिंग, वाल क्लाइम्बिंग आदि को भी विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है ताकि इसे जिले के प्रमुख पर्यटक स्थल के रूप में विकसित किया जा सके।

झोतेष्वर मंदिर गोटेगॉव- नरसिंहपुर जिले के श्रीधाम (गोटेगॉव) रेलवे स्टेषन से 15 कि.मी. दूर हरियाली से आच्छादित प्राकृतिक वादियों के बीच स्थित झोतेश्वर धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित हो चुका है। यहाँ प्रकृति की गोद में माँ राजराजेश्वरी त्रिपुर सुंदरी के दर्शन हेतु श्रृद्धालु दूर-दूर से आते है और प्राकृतिक आध्यात्मिक वातावरण में शांति का अनुभव करते है। यह प्रसिद्ध स्थल जगतगुरू शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती जी की तपोभूमि भी है। यहाँ स्थित परमहंसी गंगा आश्रम में जगदगुरू शंकराचार्य जी ने 'विचारशिला' नामक स्थान पर बैठकर कठोर तप किया था। आश्रम में ही एक जल कुण्ड बना हुआ है, जहाँ लगातार पानी बहता है। प्राकृतिक परिदृष्यों के बीच स्थित यह धार्मिक व आध्यात्मिक पर्यटन स्थल पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है और वे यहाँ आकर शांति का अनुभव करते है।

नीलकुंड धाम (सोकलपुर)- गाडरवारा से लगभग 21 कि.मी. दूर नर्मदा तट पर स्थित मनोरम प्राकृतिक स्थल है, जहाँ गाडरवारा से पलोहाबड़ा होते हुए पहुँचा जा सकता है। यहाँ से कुछ दूरी पर ही शक्कर नदी नर्मदा में आकर मिलती है, और यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य को और अधिकआकर्षक बना देती है। माँ नर्मदा का पावन तट, प्राकृतिक हरियाली से समृद्ध वातावरण और शांत स्थल इस स्थल के प्रति पर्यटकों के आकर्षण में वृद्धि करती है। नीलकुंड धाम में श्री नीलकंठेश्वर महादेव का मंदिर एवं माँ रेवा श्री आश्रम यहाँ के प्रमुख आकर्षण केन्द्र के रूप में स्थित है, साथ ही यह संतो की तपोभूमि के रूप में जाना जाता है, जहाँ संत परम्परा के लोग प्राकृतिक आध्यात्मिक वातावरण के बीच योग व ध्यान साधना में लीन रहते थे। इस स्थल तक पहुँचने का मार्ग दुर्गम अवश्य है, लेकिन मार्ग के बीचका प्राकृतिक सौंदर्य, ऊँची-नीची घाटियां, पहाड़ियाँ व ग्रामीण पृष्ठभूमि तथा नीलकुंड पहुँचने पर वहाँ का अद्भुत प्राकृतिक परिदृष्य पर्यटकों की सारी थकान दूर कर देता है और उन्हें सुखद अनुभूति प्राप्ति होती है। ठंड के दिनो में यहाँ पर घूमने हेतु जाना सर्वोत्तम पर्यटन गंतव्य हो सकता है।

टोनघाट (छोटा धुंआधार)- नरसिंहपुर गोटेगॉव मार्ग पर बेलखेड़ी से लगभग 12 कि.मी. दूर शेर (शेढ़) नदी तट पर स्थित टोनघाट प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर रमणीक स्थल है, जहाँ चट्टानों एवं विशाल पत्थरों के बीच से बहती नदी की कलकल धारा, हरियाली से आच्छादित क्षेत्र, शांत वातावरण एवं सुंदर जलप्रपात यहाँ आने वाले पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहाँ पर ऊँचाई से गिरकर शेर नदी की धार का नजारा दुग्ध धारा जैसा सफेद प्रतीत होता है, इसलिये इसे छोटा धुंआधार के नाम से जाना जाता है। इस स्थल के बारे में प्रचलित मान्यतानुसार पांडवों ने अज्ञातवास का कुछ समय यहाँ व्यतीत किया था, साथ ही राजा विराट की नगरी होने के कारण कालांतर में इस गॉव का नाम बरहटा हो गया। पर्यटन के दृष्टिकोण से यह स्थान काफी महत्व रखता है, जहाँ आने के बाद पर्यटकों को सुखद अनुभूति की प्राप्ति होती है।

हाथीनाला जलप्रपात -नरसिंहपुर से लगभग 47 कि.मी. की दूरी पर भोपाल-जबलपुर राजमार्ग में केरपानी सरसला से होते हुए रिछई गॉव

(बिल्धागॉव) के पास स्थित प्राकृतिक वातावरण से समृद्ध जलप्रपात व पर्यटन स्थल है। नौरादेही अभ्यारण्य के अंतर्गत आने वाले इस स्थल में ऊँची पहाड़ियों से नीचे गिरता झरना बारिश के मौसम में और भी मनोरम व सुंदर हो जाता है। यहाँ पानी का झरना चट्टानी सीढ़ियों की श्रृंखला से खूबसूरती से बहता है, जहाँ पानी की आवाज और झरने के आसपास का धुंधभरा वातावरण एक सुखद माहौल निर्मित करता है। झरने के आसपास चारों ओर हरियाली से समृद्ध वनस्पति इसे जैव विविधता के लिये उपर्युक्त स्थान बनाती है। युवाओं के बीच यह झरना विशेष लोकप्रिय हो रहा है। हरे-भरे पेड़ पौधों का आच्छादन और सुरम्य परिदृष्यों के बीच स्थित यह झरना एक छिपा हुआ रत्न है, जो प्रकृति प्रेमियों के लिये एक शांत और ताजा अनुभव प्रदान करता है। यहाँ आने का उत्तम समय जुलाई से सितम्बर के बीच में है, जब मानसून में होने वाली वर्षा इस जलप्रपात के सौंदर्य को और अधिक आकर्षक बनाती है साथ ही यहाँ का राजसी सुंदरता वाला वातावरण प्राकृतिक दृष्यों को निहारने के साथ ही कई साहसिक गतिविधियों जैसे- माउंटेन ट्रैकिंग व लंबी पैदल यात्रा के शौकीन लोगो के लिये एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान करता है।

जल प्रपातो पर आधारित पर्यटन केन्द्र- जिले से प्रवाहित होने वाली सरितायें प्रपात रेखा का निर्माण करती है, जिसके फलस्वरूप यहाँ से बहने वाली नदियाँ पठारी भाग से जैसे ही उत्तर के वृहद प्रदेशों में प्रवेश करती है यहाँ अनुपम सुरम्य जलप्रपातों की रचना करती है। यहाँ स्थित वनस्थली, पर्वत श्रृंखला एवं जलप्रपातों के अनुपम सौंदर्य जगह-जगह पर सुषोभित हो रहे है। इन सुरम्य जलप्रपातों की पहचान राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर नही हो पाई है फिर भी बड़ी संख्या में स्थानीय पर्यटक इन प्रपातों का आनंद लेने आते है। अधिकांश जलप्रपात वर्षा के दिनों में देखने योग्य होते है। यहाँ नरसिंहपुर जिले में विशेषकर नदी घाटों व पर्वत श्रृंखलाओं के साथ जल प्रपातों का सौंदर्य इसके कोने-कोने को सुषोभित कर रहा है और प्रकृति रूपी सुषमा किलोले कर रही है। जिले के जल प्रपातों के सम्मुख प्रकृति नदी उमंग के साथ नर्तन कर रही है और नरसिंहपुर जिले के गौरव को बढ़ा रही है। प्राकृतिक दृष्यों के दर्शनार्थ प्रदेश के अलग-अलग हिस्से से आने वाले लोग इसकी गोद में आकर नतमत्सक हो जाते है।

प्रकृति प्रदत्त अनुकूल परिस्थितियों को देखते हुए नरसिंहपुर जिला संबंधित महाकौशल अंचल का एक आदर्श पर्यटन स्थल होना चाहिये था किंतु ऐसा नही हो सका, जिसके लिये कई कारक उत्तरदायी रहे है। यह जिला अपने आंचल में कई पर्यावरणीय भिन्नताओं को समेटे हुए है, जो दृष्य सौंदर्य स्थल के रूप में पर्यटन केन्द्रों को जन्म देते है। यहाँ घने वन व गगनचुंबी पर्वतों की उपत्यका में कही समतल भूमि है, तो कहीं ऊँचीं-नीची टीलेदार धरती, जिनके बीच में प्रवाहित होती सरिताओं के साथ कल-कल करते झरने सहज ही मन मोहित करते है। यह जिला सैलानियों के लिये आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है, जिसकी अपनी नैसर्गिक छटा, अद्वितीय ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरें पर्यटन में वृद्धि करते हुए इसे विशेष स्थान प्रदान करती है।

नरसिंहपुर जिले को प्रकृति का वरदान प्राप्त है, क्योंकि यह भू-भाग चारों ओर से प्राकृतिक सौंदर्य से संपन्न है तथा यहाँ प्राकृतिक सुंदरता जिसमें नदी, पर्वत, झरने, झील, वन आदि को देखकर पर्यटन यहाँ खिचे चले आते है और सुखद अनुभूति प्राप्त करते है। जिले के इन स्थलों पर वर्ष भर पर्यटकों का आवगमन बना रहता है, जिससे जिले को काफी आय की भी प्राप्ति होती है।

निष्कर्ष- निष्कर्षत: नरसिंहपुर जिले के प्राकृतिक पर्यटन स्थल अपने प्राकृतिक सौंदर्य, जैव विविधता और शांत वातावरण के लिये प्रसिद्ध है। इन स्थलों का विकास और संरक्षण जिले के पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। पर्यटकों की बढ़ती संख्या और बेहतर सुविधाओं के साथ, नरसिंहपुर जिले का प्राकृतिक पर्यटन क्षेत्र भविष्य में और समृद्ध हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. सिंह, डॉ. सुमन्त (2005-06)-मध्यप्रदेश का पारिस्थतिकी पर्यटन, यू.जी.सी. प्रोजेक्ट।
2. नेमी, डॉ. जगमोहन (2010)- पर्यटन मार्केटिंग में विकास, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. श्रीवास्तव, डॉ. संदीप (2011)- मध्यप्रदेश के पर्यटन स्थलों में अनुप्रयोग, रिसर्च इंडिया प्रेस, नई दिल्ली।
4. गौतम, श्री राकेश एवं भदौरिया, श्री जितेन्द्र सिंह (2013)-मध्यप्रदेश एक परिचय, टाटा मैक्ग्रा हिल एजूकेशन इंडिया लिमिटेड़ नई दिल्ली।
5. अहमदशाह, श्री रफीक (1999)- 'प्रयास' एक मानवीय एहसास, कंदेली फोरम, नरसिंहपुर।
6. गुप्ता, श्री कंछेदीलाल (2003)- जिला नरसिंहपुर गौरवमयी अतीत एवं गरिमामय वर्तमान, शारदा प्रकाशन।
7. राय, श्री चंद्रभानु (2001) - 'नरसिंह नयन' कर्मवीर द्वारा पुनर् प्रकाशन।
8. नरसिंहपुर जिला गजेटियर (1972)
9. https://narsinghpur.nic.in/ पर्यटन स्थल/

****